IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संगीत में यमन राग की महत्वपूर्ण भूमिका

सिद्धार्थ राव[a,b] एवं डॉ. दीप्ति भटनागर[a]

[a]संजय अग्रवाल ग्लोबल एजुकेशनल (सेज़) विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश – 462022, भारत

[b]दीवाना म्यूज़िकल ग्रुप सीहोर मध्य प्रदेश – 466661, भारत

संक्षेपिका

राग एक संरचना है जो स्वरों के आरोहण और अवरोंहण के नियमों पर आधारित होती है यह भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक मूल आधार है जो किसी राग में अलग-अलग स्वरों के साथ संगीत के प्रदर्शन को निर्धारित करता है राग संगीत की संरचना का आधार है एक राग में आरोह और अवरोह पैमाने होते हैं जो संगीत में लय और ताल को जोड़ते हैं रागों को मौसम के हिसाब से गाया बजाया जाता है उदाहरण

कुछ रागो को सुबह गाया जाता है कुछ रागो को शाम को गाया बजाया जाता है समय के अनुसार रागों को बजाने की सलाह दी जाती है राग का मूल रूप हिंदुस्तानी संगीत के बिलावल थाट को माना गया है इसके अंतर्गत सुर शुद्ध और कोमल दो भाग में विभक्त हैं इस तरह कोमल और शुद्ध स्वरों से अन्य रागों की रचना हुई है जैसे राग यमन में तीव्र मां का प्रयोग राग भैरवी में रे_ गा_धा_नि_ कोमल अन्य स्वर शुद्ध प्रयोग होते हैं ।

संगीत

संगीत शब्द संस्कृत भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है सम और गीत अर्थात संगीत शब्द गीत शब्द में सम उपसर्ग लगने से बना है सम मतलब गाना समान भाषा में स्वरों की वह रचना जो कानों में मधुर लगे और जो मनुष्य के मन को आनंदित करें उसे संगीत कहते हैं

राग यमन का संक्षिप्त परिचय

राग यमन एक बहुत ही लोकप्रिय राग है जो कल्याण थाट से उत्पन्न होता है इस राग को यमन या ईमन के नाम से भी जाना जाता है खासकर मुगल शासन काल के दौरान इस राग में मध्यम स्वर तीव्र मा' होता हे जबकि सभी स्वर शुद्ध होते हैं

उत्पत्ति

राग यमन की उत्पत्ति कल्याण थाट से हुई है

इस राग में तीव्र मा' का प्रयोग किया जाता है ।

शुद्ध स्वर

इस राग में बाकी सभी स्वर शुद्ध होते हैं यह राग एक लोकप्रिय राग है और इसे हिंदुस्तानी संगीत परंपरा में काफी महत्व दिया जाता है यह राग संध्याकाल में गाया बजाया जाता है इस राग में माधुर्य गुण पाया जाता है

उपयोग

राग यमन का उपयोग विभिन्न प्रकार के संगीत के रूपों में किया जाता है जैसे ख्याल ,आलाप, तराना आदि में

राग यमन

स्वर - मध्यम मा' तीव्र शेष शुद्ध स्वर

जाति - संपूर्ण संपूर्ण

थाट- कल्याण

वादी -संवादी = गांधार निषाद

समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

विश्रांति स्थान - सा गा, नि. -सा नि. पा गा

आरोह - नि. रे सा , नि. रे गा मा' पा धा नि सा

अवरोह - सं नि धा पा मा' गा रे सा नि. रे सा

पकड़ - नि. रे गा रे सा , पा मा' गा रे सा

राग यमन - का प्राचीन नाम कल्याण है कालांतर में मुगल शासन के समय से इसे यमन कहां जाने लगा इस राग के अवरोह में जब शुद्ध मध्यम का अल्प प्रयोग गंधार को वक्र करके किया जाता है तब इस प्रकार दोनों मध्य प्रयोग करने पर इसे यमन कल्याण कहते हैं इस राग का वादी स्वर गंधार सप्तक के पूर्वांग में होने के कारण यह पूर्वांग प्रधान राग है आलाप और तानों का प्रारंभ अधिकतम निषाद से किया जाता है

राग यमन की पृष्ठभूमि

राग यमन एक प्राचीन भारतीय राग है जो कल्याण थाट से उत्पन्न हुआ है इसे यमन के नाम से भी जाना जाता है जिसका अर्थ हे कल्याण थाट अमीर खुसरो ने इसका नाम बदलकर कल्याण से यमन कर दिया था इसलिए यमन को कल्याण थाट का आश्रय राग भी कहा जाता है

संगीत की उत्पत्ति

संगीत भारत में वैदिककाल से ही प्रचलित रहे वेदों उपनिषदों दर्शन आदि के उल्लेख पाए जाते हैं संगीत का साथ जीवन विज्ञान, शास्त्र कला, तत्वज्ञान, और आध्यात्मिक आदि सभी पहलुओं से विकसित हो रहा है परंतु ईसवी सदी के पूर्व **200** वर्षों के आसपास संगीत का प्रचार स्वतंत्र रूप से होने लगा संगीत एक योग विद्या , लय, संगीत साधक अभ्यास से निर्वाह करने यत्न करता है संगीत विद्या और संगीत साधना को समांतर मानते हैं क्रिया मानते हैं गायन संगीत में आसन पर बैठने की स्थिति पर विशेष ध्यान दिया गया है

संगीत की उत्पत्ति का इतिहास

काफी पुराना और विविध है हिंदू परंपराओं में संगीत की उत्पत्ति ब्रह्मा जी से मानी जाती है कहा जाता है संगीत की विद्या ब्रह्मा जी ने नारद जी को दी नारद जी ने शिवजी को और शिवजी से मां सरस्वती जी को संगीत की विद्या प्राप्त हुई मां सरस्वती ने संगीत की विद्या हनुमान भरत को प्रदान की भरत से संगीत विद्या गंधर्वों को प्राप्त हुई इस प्रकार संगीत की वृद्धि होती चली आ रही है

भारतीय शास्त्रीय संगीत

भारतीय संगीत का एक अभिन्न अंग है जो मुख्य रूप से दक्षिण एशिया संगीत की एक शैली है

यह दो प्रमुख शाखाओ में विभाजित है हिंदुस्तानी संगीत (उत्तर भारत) कर्नाटक संगीत (दक्षिण भारत) यह संगीत राग और ताल के सिद्धांतों पर आधारित है जो एक मधुर और लयबद्ध संरचना प्रदान करते हैं

हिंदुस्तानी संगीत

मुगल बादशाहों के शासनकाल में इसका विकास हुआ ध्रुपद ,ख्याल ,त्रिवट ,गाथा ,ताल, आदि रूपों में इसमें सीतार, सरोद, वीणा, तानपुरा, बांसुरी, शहनाई ,सारंगी, संतूर ,पखावज, तबला, आदि जैसे वाद्य यंत्रों का इस्तेमाल किया जाता है

कर्नाटक संगीत

दक्षिण मंदिरों में इसका विकास हुआ इसमें बिना बिनु ,मृदंग, धमत ,वायलिन, कंजीर, नादाश्वरम आदि वाद्य यंत्रों का इस्तेमाल होता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में -

धुन ,राग ,स्वर ,ताल, गुरु शिष्य, परंपरा विद्यमान है ।

शास्त्रीय संगीत एक जटिल और समृद्ध कला है जो सदियों से भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है ।

राग यमन – संरचना और महत्व

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में राग यमन का एक विशिष्ट और अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह राग **कल्याण ठाट** का प्रमुख राग है तथा इसकी **जाति संपूर्ण-संपूर्ण** है, जिसमें आरोह और अवरोह दोनों में सात-सात स्वर

प्रयोग किए जाते हैं। राग यमन की स्वर-संरचना में विशेष रूप से **तीव्र मध्यम (M#)** का प्रयोग इसे अन्य रागों से अलग बनाता है। इसका आरोह है – **सा रे ग प ध नि सां**, और अवरोह – **सां नि ध प म# ग रे सा**। इसमें **वादी स्वर 'ग'** और **संवादी स्वर 'नि'** होता है। राग यमन का गायन और वादन का उपयुक्त समय **रात्रि का प्रथम प्रहर (6 से 9 बजे तक)** माना गया है। यह राग अपने मधुर, गंभीर, करुण और भक्ति भाव से श्रोताओं के मन को छू लेने में सक्षम है। इसकी तानों और आलाप में सौंदर्य, माधुर्य और गहराई होती है। राग यमन का महत्व न केवल शास्त्रीय संगीत में बल्कि लोकसंगीत, भजन और हिंदी फिल्म संगीत में भी व्यापक रूप से देखने को मिलता है। संगीत शिक्षा में इसे एक **प्रारंभिक और अनिवार्य राग** माना जाता है क्योंकि इसके माध्यम से स्वर-संधान, रागदारी और भाव-अभिव्यक्ति की उत्कृष्ट शिक्षा संभव होती है। इसके अलावा, विभिन्न घरानों और संगीतज्ञों ने राग यमन की प्रस्तुति में अपनी अलग-अलग विशेषताएँ और शैली जोड़ी हैं, जिससे यह राग समकालीन संगीत-संसार में भी अत्यंत लोकप्रिय बना हुआ है।

जीवन में संगीत महत्वपूर्ण क्यों है एक निष्कर्ष

संगीत हमें हर तरह की भावनाओं से निपटने में मदद करता है और इस तरह शक्ति प्रदान करता है यह हमारे जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकता है और हमारे नियंत्रण की भावना को बढ़ा सकता है यह स्वयं भावनाओं का समर्थन करता है और इसीलिए विभिन्न शारीरिक के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की भावना को बढ़ाता है जीवन में संगीत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है यह न केवल एक कला है बल्कि एक ऐसी भाषा है जो भावनाओं को व्यक्त करने और लोगों को जोड़ने में मदद करता है संगीत सुनने बजाने या बनाने से कई लाभ होते हैं तनाव कम होता है मूड में सुधार होता है एकाग्रता में वृद्धि याददास्ता में सुधार होता है संगीत सुनना अधिकांश लोगों को अच्छा लगता है यह आपके स्वास्थ्य पर भी सुधार करता है एक लंबे तनावपूर्ण दिन के बाद सही लय आपको आराम करने में मदद कर सकती है यदि हम उदास महसूस कर रहे हो तो संगीत आपको फिर से जीवंत बना देता है।

उपसंहार

संगीत को ईश्वर का दर्जा प्राप्त है इसलिए इस विधा में शुद्धता और शास्त्रीयता का विशेष महत्व है।

सात शुद्ध ओर पांच कोमल स्वरों के माध्यम से मन को साधने का उपाय है ।

वही संगीत हमारी आत्मा को शुद्ध करता है।

संगीत का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना ही नहीं होता बल्कि संगीत मन मस्तिष्क पर केंद्रित होकर स्वरों की उपासना, रियाज, शास्त्र ,शुद्ध पवित्र पद्धति द्वारा नाद , ब्रह्मा की आराधना कर अंतर्मन में गहराई तक उतरना संगीत का मुख्य लक्ष्य है।

संगीत में प्रयास के लिए एकाग्रता की आवश्यकता होती है संगीत में स्वरों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है विभिन्न वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि संगीत साधना जीवन में शक्ति का विकास होता है ।

आभार प्रदर्शन

लेखक निदेशक, संजय अग्रवाल ग्लोबल एजुकेशनल (सेज़) विश्वविद्यालय, भोपाल, के प्रति आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करने हेतु आभार व्यक्त करते हैं।

ग्रन्थसूची

1. भातखंडे, वी.एन., क्रमिक पुस्तक मलिका
2. पलुस्कर, विष्णु दिगंबर
3. कॉफ़मैन, वाल्टर. उत्तर भारत के राग
4. बोर, जोएप, एट अल। राग गाइड
5. पं. के साक्षात्कार और रिकॉर्डिंग भीमसेन जोशी, उस्ताद अमीर खान, पं. जसराज
6. भटनागर, एस. एन. (2005)। *हिंदुस्तानी रागों का विवेचन*। वाराणसी: चौखम्भा संस्कृत सीरीज़।
7. पं. वी. एन. भातखंडे। (2000)। *हिंदुस्तानी संगीत पद्धति*। मुंबई: संगीत सागर प्रकाशन।
8. पं. ओंकारनाथ ठाकुर। (1999)। *भारतीय संगीत का इतिहास*। इलाहाबाद: हिंदी साहित्य सम्मेलन।
9. मिश्रा, ललित किशोर। (2010)। *राग परिचय (भाग-1)*। दिल्ली: संगीत साहित्य अकादमी।
10. पं. हरीप्रसाद चौरसिया द्वारा रचित एवं प्रस्तुत राग यमन की रिकॉर्डिंग्स। (YouTube और अन्य डिजिटल माध्यम)
11. शर्मा, वीरेन्द्र। (2012)। *कल्याण ठाट के रागों का तुलनात्मक अध्ययन*। वाराणसी: संगीत भारती प्रकाशन।
12. बोर, जोआचिम। (1984)। *दि राग्स ऑफ नॉर्थ इंडियन म्यूज़िक*। मुंबई: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
13. पं. कुमार गंधर्व। (1998)। *राग-दर्शन*। भोपाल: भारत भवन।
14. राजन, एस.एन. (2015)। *हिंदुस्तानी संगीत का विकास*। दिल्ली: संगीत निकेतन।
15. डॉ. प्रवीण गायकवाड। (2019)। *राग यमन का विश्लेषणात्मक अध्ययन*। पुणे: संगीत साहित्य प्रकाशन।
16. श्रीवास्तव, रामाश्रय झा। (2003)। *अभिनव गीत मंजरी*। वाराणसी: संगीत भारती।
17. भट्ट, मुक्ता रानी। (2010)। *कल्याण ठाट के रागों की भावात्मक विशेषताएँ*। नई दिल्ली: साहित्य निकेतन।